शहीद गुलाब सिंह

शहीद गुलाब सिंह लोधी का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के ग्राम चन्दीकाखेड़ा (फतेहपुर चैरासी) के लोधी क्षत्रिय परिवार में सन् 1903 में हुआ था। इनके पिताजी ठाकुर श्रीराम रतनसिंह लोधी उन्नाव के एक प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित जमींदार थे।

1935 में झण्डा सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने उन्नाव जिले के कई सत्याग्रही जत्थे लखनऊ गये थे, परन्तु सिपाहियों ने उन्हें खदेड दिया और ये जत्थे तिरंगा झंडा फहराने में कामयाब नहीं हो सके। इन्हीं सत्याग्रही जत्थों में शामिल वीर गुलाब सिंह लोधी किसी तरह फौजी सिपाहियों की टुकडियों के घेरे की नजर से बचकर अमीनाबाद पार्क में घुस गये और चुपचाप एक पेड़ पर चढ़ने में सफल हो गये क्रांतिवीर गुलाब सिंह लोधी के हाथ में डंडा जैसा बैलों को हांकने वाला पैना था। उसी पैना में उन्होंने अपने कपड़ों में छिपाकर लाया गया तिरंगा झंडा लगाकर फहरा दिया।

जैसे ही क्रांतिवीर गुलाब सिंह लोधी तिरंगा फहरा कर जोर-जोर से तिरंगे झंडे की जय, महात्मा गांधी की जय, भारत माता की जय नारे लगाने लगे अमीनाबाद पार्क के चारों ओर एकत्र हजारों लोग एक साथ गरज उठे और तिरंगे झंडे की जय, महात्मा गांधी की जय, भारत माता की जय के गगनभेदी नारों से पार्क गूंज उठा।

क्रांतिवीर गुलाब सिंह लोधी के झंडा फहराकर नारे लगाते ही अंग्रेजी सिपाहियों की उन पर नज़र गई और अंग्रेजी साहब का गोली चलाने का हुकुम हुआ, कई

बन्दूकें एक साथ ऊपर उठी और धांय-धांय कर फायर होने लगे, गोलियाँ क्रांतिवीर सत्याग्रही गुलाब सिंह लोधी को जा लगी। जिसके फलस्वरूप वह घायल होकर पेड़ से जमीन पर गिर पड़े। रक्त रंजित वीर धरती पर ऐसे पड़े थे, मानो वह भारत माता की गोद में सो गये हों। इस प्रकार आजादी की बलिवेदी पर अपने प्राणों को न्यौछावर कर गुलाब सिंह लोधी 23 अगस्त 1935 को शहीद हो गये।

क्रांतिवीर गुलाब सिंह लोधी के तिरंगा फहराने की इस क्रांतिकारी घटना के बाद ही अमीनाबाद पार्क को लोग झंडा वाला पार्क के नाम से पुकारने लगे और वह आजादी के आन्दोलन के दौरान यह राष्ट्रीय नेताओं की सभाओं का प्रमुख केन्द्र बन गया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय अग्रणी भूमिका निभाने के लिए उनकी याद में केंद्र सरकार द्वारा 23 दिसंबर 2013 को डाक टिकट जारी किया गया।